

## सरस्वती पत्रिका का हिंदी भाषा के विकास में योगदान

डॉ. आदर्श किशोर  
सह आचार्य, हिंदी  
राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर

भारतेंदु से पूर्व का अधिकांश साहित्य आम जनता से कटा हुआ था। उसकी रचना या तो राजा महाराजाओं तथा सामंतों की श्रृंगार और विलासिता पूर्ण भावनाओं के उद्दीपन के लिए होती थी या फिर हिंदी के भक्त कवि भक्ति के दर्शन के तात्विक विवेचन और संसार की आस्था को समझने में लगे थे। इससे पाठक वर्ग की साहित्यिक रुचि श्रृंगारिकता की ओर तथा सामाजिक मुद्दों से उन्मुख हो चली थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके सहयोगियों ने साहित्य को दरबारीपन और भक्ति से निकालकर जनसामान्य के बीच में लाने का प्रयास किया।

1900 ई. में के जनवरी माह में हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध रूपगुणसम्पन्न प्रतिनिधि पत्रिका **सरस्वती** का इलाहाबाद से प्रारम्भ हुआ था। श्यामसुन्दर दास के बाद 1903 ई में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस पत्रिका के संपादक का दायित्व संभाला। द्विवेदी 1920 ई तक इसके संपादक रहे। इनके बाद पदुमलाल पुत्रालाल बख्शी, देवी दत्त शुक्ल, श्रीनाथ सिंह, और श्रीनारायण चतुर्वेदी सम्पादक हुए।

1903 ई. में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती के संपादन का कार्यभार संभाला कर एक ओर भाषा के स्तर पर और दूसरी ओर प्रेरक बनकर मार्गदर्शन का कार्य किया। उन्होंने इसके माध्यम से साहित्यिक और राष्ट्रीय चेतना को स्वर प्रदान किया। द्विवेदी जी ने भाषा की समृद्धि करके नवीन साहित्यकारों को राह दिखाई। राष्ट्रीय जागरण की सरस्वती प्रमुख पत्रिका थी। भारतीय युग के साहित्यिक मूल्यों का विकास पर हुआ रामविलास शर्मा लिखते हैं, "इसके लेखक विज्ञान संबंधी लेखों तथा पुराने विचार बदलकर नई सामाजिक चेतना का प्रसार करना चाहते थे। वैसे भी साहित्य द्वारा वे जनता के पुराने संस्कार बदलकर उसका मानस नए सांचे में ढालना चाहते थे।"<sup>1</sup>

सरस्वती उस युग के साहित्य एवं भाषा की प्रतिनिधि पत्रिका थी, जिसने भारतेंदु युग की भाषा परंपरा को विकृति नहीं किया, अपितु उसके स्वरूप को स्थिर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। "भाषा के स्वरूप को स्थिर करने में सबसे बड़ी बाधा थी हिंदी लेखकों का व्याकरण के नियमों के प्रति अवहेलना का भाव। बीसवीं सदी के प्रारंभ में अधिकांशतः ऐसे लोग साहित्य निर्माण के कार्य में उत्साह दिखाने लगे जिन की शिक्षा दीक्षा उर्दू फारसी या अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हुई थी इसलिए इनकी शिकायत यही थी कि मुझे तो हिंदी आती नहीं। इधर से जवाब मिलता था कि तो क्या हुआ आ जाएगी। कुछ काम तो शुरू कीजिए।"<sup>2</sup> भाषा और व्याकरण के परस्पर संबंध को स्पष्ट करने के लिए कई जागरूक साहित्यकार तथा भाषा शास्त्री सजग हुए। नवंबर 1905 की सरस्वती में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा और व्याकरण नाम से एक लंबा लेख लिखा। इस लेख में हिंदी भाषा के प्रयोग में एकरूपता लाने पर बल दिया गया और हिंदी में किसी सर्वमान्य व्याकरण के अभाव पर खेद व्यक्त किया। भाषा के लिए व्याकरण की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए आचार्य द्विवेदी ने इस लेख में लिखा, "आहार और विहार के परिणाम को परिमित रखने और आरोग्य शास्त्र के नियमों का उल्लंघन न करने से आदमी अधिक समय तक जीता रहता है, अल्पायु नहीं होता। इसी तरह व्याकरण के नियमों से भाषा के कलेवर को दृढ़ करने से उसका भी आयुर्बल बढ़ जाता है।"<sup>3</sup> व्याकरण की अवहेलना से एक ही भाषा के प्रयोग में भिन्नता जाती है।

भाषा के लिए व्याकरण की महत्ता को स्थापित करने के पश्चात आचार्य द्विवेदी ने अपने समकालीन तथा पूर्ववर्ती रचनाकारों की रचना में व्याकरण संबंधी अनेक दोष दिखाकर हिंदी के लेखकों का ध्यान भाषा की शुद्धता की ओर खींचा

I सरस्वती में उन्होंने प्रकाशानार्थ आई रचनाओं की भाषा का संशोधन किया तथा दूसरों को भी अवगत कराया I अपने भाषणों, भूमिकाओं तथा संपादकीय निवेदन के द्वारा रचनाकारों को व्याकरण संबंधी दोषों के प्रति सावधान करके हिंदी भाषा के स्वरूप में एकरूपता लाने का प्रयास किया I जिससे राष्ट्रीय एकीकरण में मदद मिल सके I अच्छे व्याकरण के अभाव में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उसी लेख में लिखा है कि हिंदी की दशा अनस्थिर हो रही है I एक तो हिंदी भाषा में साहित्य का एक प्रकार से अभाव ही है दूसरे उसकी अनस्थिरता उसे और बर्बाद कर रही है I उन्होंने भाषा और व्याकरण वाले लेख में स्पष्ट लिखा कि हिंदी में संस्कृत के सरल शब्दों और ऐसे विदेशी शब्दों जिन्हें सब समझते हैं, प्रयुक्त होना चाहिए I शब्द चिरस्थायी, सबके समझने लायक होना चाहिए I बस कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका संस्कृत में कुछ अर्थ है पर हिंदी में वे दूसरे अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, ऐसे शब्द सर्वथा त्याज्य हैं I बुनियादी एकता दिखा कर आचार्य द्विवेदी ने राष्ट्रीय महत्व का कार्य किया I भाषा सामाजिक विकास की ऐतिहासिक आवश्यकता होती है, वह जड़ और स्थिर वस्तु नहीं होती I समय और सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ उसमें भी परिवर्तन होते हैं, इसलिए द्विवेदी जी एक ओर हिंदी में ठेठ अरबी फारसी के अप्रचलित शब्द भर देने के विरोधी थे, दूसरी ओर हिंदी के जातीय स्वरूप की रक्षा करते हुए वह आमजन में प्रचलित अरबी फारसी के शब्द ले लेने के समर्थक थे I

हिंदी भाषा के स्वरूप निर्धारण की एक और महत्वपूर्ण समस्या थी, खड़ी बोली और ब्रजभाषा का विवाद I उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में प्रेस आदि वैज्ञानिक आविष्कारों, नए-नए कल कारखानों की स्थापना तथा पश्चिमी शिक्षा संस्कृति के कारण प्रभाव के कारण आधुनिक हिंदी साहित्य ने जन्म लिया I आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, “इस साहित्य के केंद्र में कोई राजा या रईस नहीं रहा बल्कि अपने घर में बैठी हुई और असंख्य, अज्ञात जनता आ गई I”<sup>4</sup> पहली बार साहित्य में प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना हुई I जनसाहित्य की रचना के लिए जनभाषा जरूरी होती है I अतः हिंदी भाषी प्रदेश में ब्रजभाषा नहीं, खड़ी बोली हिंदी की जनभाषा हो सकती थी I इसलिए ब्रजभाषा का हास और खड़ी बोली का विकास उस युग की मांग थी I

डॉ रामविलास शर्मा ने बृज की जगह की जगह हिंदी खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करने का श्रेय द्विवेदी जी को ही दिया है I जुलाई 1901 सरस्वती में द्विवेदी जी ने कभी कर्तव्य नाम से एक लेख लिखा इस लेख में उन्होंने हिंदी कवियों को ललकारते हुए कहा था कि कवियों को चाहिए कि वे क्रम क्रम से गद्य की भाषा में भी कविता करना प्रारंभ करें I बोलना एक भाषा में और कविता में प्रयोग करना दूसरी भाषा I यह प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है I सरस्वती के प्रकाशन के समय ऐसे कई आलोचक मौजूद थे जो सैद्धांतिक रूप से खड़ी बोली में कविता रचने का आंदोलन तो चला रहे थे लेकिन इस आंदोलन को व्यावहारिक रूप देने में कम ही उत्साह दिखा रहे थे I बाबू श्याम सुंदर दास ने विषय इस विषय में जून 1901 सरस्वती में लिखा, “खड़ी बोली की कल्पना के विषय में लिखते ही पंडित श्रीधर पाठक का नाम स्मरण हो आता है I इसमें संदेह नहीं कि मुजफ्फरपुर के बाबू अयोध्या प्रसाद जी नए भाषा के इस सुधार पर बहुत जोर दिया और अभी तक वे इस उद्योग में लगे हुए हैं I सरस्वती के कवि लेखकों ने ब्रजभाषा के काव्य की जड़ें खोदकर जन भाषा में रची कविता की नींव डालकर उसे पल्लवित किया I द्विवेदी जी तथा उनके सहयोगियों का यह कार्य हिंदी के स्वरूप निर्माण में महत्वपूर्ण समझा जाएगा I सरस्वती के प्रकाशन से पहले, उसके साथ-साथ तथा उसके बाद भी बहुत सी पत्रिकाएं निकलती रही लेकिन सरस्वती ही हिंदी में एकमात्र ऐसी पत्रिका थी जिसने साहित्य के अतिरिक्त आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की सामग्री को खड़ी बोली हिंदी में छाप-कर जनता के सामने रखा I ज्ञान विज्ञान की भाषा तथ्यात्मक तथा अभिधापरक होती है, इस कारण द्विवेदी युग की भाषा के स्वरूप में भी परिवर्तन आया I ज्ञान-विज्ञान तथा चिंतन की भाषा के रूप में हिंदी के प्रतिष्ठापना होने पर उसके शब्द भंडार में वृद्धि हुई, उसका प्रचार-प्रसार हुआ तथा उसके स्वरूप में एकरूपता आई I सरस्वती का यह कार्य हिंदी भाषा के स्वरूप निर्धारण और उसके विकास में महत्वपूर्ण माना जाएगा I

राष्ट्रीय जागरण के दौरान मातृभाषा प्रेम देशप्रेम का अंग बन गया था I द्विवेदी युग का राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय जागरण का मुख्य अंग था I सरस्वती विभिन्न स्तरों पर जनता में जागृति की भावना पैदा करके राष्ट्रीय आंदोलन की गति को और तेज कर रही थी I इस युग के राष्ट्रीय जागरण में सबसे बड़ी बाधा थी, भारतीय जनता में धर्म, संप्रदाय, जाति तथा प्रांतीयता की भावना जो हिंदुस्तान की अखंडता को खंडित कर रही थी I इसलिए हिंदुस्तान की एकता को बनाए रखने के लिए, यहां की जनता के हृदय में परस्पर प्रेम, सहानुभूति, एकता तथा भाईचारे के भाव पैदा करने के

लिए जरूरी था हिंदुस्तान की एक राष्ट्रभाषा हो, जिसके आधार पर भारतीय जनता भावनात्मक स्तर पर परस्पर जुड़कर राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करें और उन्हें सुलझा सके।

आचार्य द्विवेदी ने देश व्यापक भाषा की आवश्यकता तथा उसके प्रभाव को स्पष्ट करते हुए 'देशव्यापक भाषा' पर लेख लिखा। हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा होने की इसलिए भी अधिकारी है क्योंकि उसमें दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुसार तराश कर पचाने की शक्ति सबसे अधिक है। द्विवेदी जी के अतिरिक्त सरस्वती के दूसरे लेखक भी हिंदी भाषा को ही राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास कर रहे थे। आचार्य द्विवेदी ने देवनागरी लिपि को निर्दोष, सरल तथा पूर्ण बताकर हिंदी भाषी विद्वानों से रागद्वेष मुक्त होकर अपनाने की अपील की। लिपि की एकता से विभिन्न भाषाभाषी लोगों में परस्पर सहानुभूति बढ़ेगी, विचारों का आदान-प्रदान होगा, परायेपन का भाव कम होगा और सबके मन में यह भाव पैदा होगा कि यदि हम भिन्न-भिन्न भाषा बोलते हैं तब भी हम सब एक ही देश के निवासी हैं।

सरस्वती हिंदी की एकमात्र ऐसी पत्रिका थी जिसने भारत सरकार की दोगली भाषा नीति की कटु आलोचना की। द्विवेदी युग में कचहरियों की हिंदी की जो दशा थी स्वाधीनता प्राप्ति बाद भी उसकी दशा में बहुत परिवर्तन दिखाई दे रहा। सरस्वती ने शिक्षा के माध्यम के रूप में देशी भाषाओं की अपनाने के लिए संघर्ष किया। 1913 में सरस्वती में लिखा : यदि देशी भाषाओं में शिक्षा दी जाए तो समय और श्रम की बहुत ही बचत हो सकती है। उस समय और श्रम के सद्वाय से और उपयोगी काम किया जा सकता है। अपने देश की भाषाओं के साहित्य और कविता के परिशीलन से इस देश के निवासियों के संस्कार, विचार और सदाचार में जितनी उन्नति हो सकती है उतनी अंग्रेजी भाषा के साहित्य के परिशीलन से नहीं।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास से जुड़ी हुई अंतिम समस्या मानसिकता की समस्या, जिसके कारण हिंदी के लेखकों की संख्या बहुत कम थी। इसको दूर करने के लिए द्विवेदी को जहां किसी व्यक्ति में रचनात्मक प्रतिभा की थोड़ी भी झलक दिवेदी जी को दिखाई दी, चाहे वह व्यक्ति देश में हो या विदेश में उसकी भाषा का हो या अथवा किसी दूसरी भाषा का उसी हिंदी में लिखने के लिए विवश कर देते थे।

सरस्वती के लेखकों ने भाषा के लिए व्याकरण पर बल देकर हिंदी भाषा के स्वरूप को स्थिर करने तथा उसके प्रयोग में एकरूपता लाने का प्रयास किया। हिंदी भाषा को देश व्यापक भाषा बनाने के लिए, उसे ज्ञान विज्ञान, सरकारी दफ्तरों, कचहरियों तथा शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार करने के लिए सरकार से संघर्ष तथा जनता से अपील की। हिंदी भाषा के प्रचार के लिए, शिक्षित लोगों को हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। सरस्वती के लेखकों के ये कार्य हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण समझे जाएंगे। भारतीय राष्ट्रीय जागरण बहुआयामी आंदोलन था, इसकी प्रकृति निश्चय ही यूरोपीय पुर्नजागरण से भिन्न थी। राष्ट्रीय आंदोलन के उन्नति वाले पक्ष को अपनाकर सरस्वती ने यह सिद्ध कर दिया कि विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति किए बिना स्वराज्य की कल्पना असंभव है।

सरस्वती के माध्यम से द्विवेदी ने भाषा संस्कार का एक महत्वपूर्ण कार्य किया। भाषा को त्रुटिरहित एवं व्याकरण सम्मत बनाने में उनका योगदान अविस्मरणीय है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं कि "यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते तो जैसी अव्यवस्थित, व्याकरण-विरुद्ध और उटपटांग भाषा चारों ओर दिखायी पड़ती थी, उसकी परम्परा जल्दी न रुकती।" लेखकों के विशाल परंपरा देने के अतिरिक्त हिंदी को राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के गौरव को प्राप्त करने तथा भाषा के परिनिष्ठित रूप निर्धारण में सरस्वती पत्रिका का योगदान वंदनीय है।

सन्दर्भ -

1. रामविलास शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण
2. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास
3. हरप्रकाश गौड़, सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास